P.G. Sem-02
8.8.07

गांधी दर्शन में- सर्वोदय की अवधारणा

सर्वोदय गांधी जी का वह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दर्शन है, जिसका उद्देश्य मानवकृत विषमताओं को समाप्त कर प्राकृतिक विषमताओं के साथ " सभी मानव का सभी प्रकार से उत्थान अथवा कल्याण करना है।"

गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक अंटू दिस लास्ट का गुजराती अनुवाद सर्वोदय के नाम से किया। गांधी का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति का ही विकास समाज का विकास है अतः समाज कल्याण हेतु सहजीवन कोई परमार्थ नहीं है, बल्कि जीवन का आधार है।

गांधी के उपरोक्त विचारधारा पर भारतीय दार्शनिक चिंतनधारा का स्पष्ट प्रभाव है। भारतीय दर्शन में वेदांत के अनुयायी सर्व खल्विदं ब्रह्म की अवधारणा स्वीकार की गई है। अर्थात विश्व के कण-कण ब्रह्म/चेतना का अभिव्यक्त स्वरूप है, अतः सभी समान है अर्थात एक में सभी व्याप्त है और सभी में उस एक की उपस्थिति है। अतः स्वयं को जानना ब्रह्म को जानना है और ब्रह्म को जानना सबको जानना है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का विकास या कल्याण सबके विकास की न केवल तार्किक अनिवार्य है, बल्कि तात्विक अनिवार्यता भी है।

गांधी जी के सर्वोदय के साधन के रूप में ही सत्य एवं अहिंसा है। जिसमें सत्य-अहिंसा के द्वारा सामाजिक न्याय की स्थापना की जाती है, क्योंकि सर्वोदय का उद्देश्य 'अन्त्योदय' की अवधारणा है अर्थात जो जीवन के अंतिम कगार के

साथ मूलभूत आवश्यकताओं की सुनिश्चित किया जा सके और सर्वोदय के इस संकल्पना को साकार करने के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन अनिवार्य होगा।

मानव सभ्यता के अंतिम कगार में स्थित लोगों का उदय या उत्थान ही सर्वोदय का मूल उद्देश्य है। सर्वोदय की अवधारणा मानव नहीं 'व्यक्ति' पर बल प्रदान करता है अर्थात 'प्रत्येक एक की विकास हो' सबका विकास है। और यह तभी संभव है, जब एक ऐसे समाज की स्थापना हो, जिसमें शक्ति और शासन दोनों व्यक्ति में विलीन हो जाये। गांधी- जी के अनुसार मानव सभ्यता में जो दुष्ट होने की स्थिति में है, उसका संरक्षण और विकास शो- षण या वर्ग मुक्त समाज में ही संभव है, अर्थात जहां सामाजिक न्याय संस्कृति का केन्द्र बिन्दु हो।

गांधीजी के अनुसार सर्वोदय दो सिद्धांतों पर आधारित होगा - शारीरिक श्रम एवं अप- रिग्रह। सर्वोदय समाज में साधन, जिसमें भूमि भी शामिल होगी, सबकी समान सम्पत्ति होगी, उसका समाज व्यक्तियों के हित के लिए प्रयोग होगा। इस समाज में वर्गभेद नहीं होगा, नाहि कोई पूंजीपति होगा न मजदूर होगा, मुनाफा, किराया और ब्याज जैसे शब्द का कोई अर्थ नहीं होगा।

गांधी के सर्वोदय समाज में शामिल व्यक्ति के साथ मानव समूह सभी के जीवन सामाजिक, आर्थिक नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोणों दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है। सर्वोदय समाज के प्रत्येक सदस्य के साथ समाज भी स्वतंत्र होगा, और उसकी यह स्वतंत्रता संकीर्ण अर्थों में नहीं बल्कि वृहत् अर्थों में स्वतंत्रता नहीं है बल्कि इसका अर्थ है कि व्यक्ति स्वयं के बंधन से मुक्त हो जायेगा और इस बंधन को समाप्ति का सामान्य न्याय/नैतिकता, हृदयपरिवर्तन से होगा।